gekj ;gk x.ko'k ugh gA

स्कूल गणवेश को लेकर अलग–अलग मत मिलते हैं। अधिकांश स्कूलों में तो गणवेश को बड़ी गम्भीरता से लिया जाता है। अक्सर जब उनसे पूछा जाता है, कि गणवेश लागू करने से क्या फायदा होता है। तो निम्न कारण नजर आते है। एक गणवेश होगी तो बच्चे देखने में अच्छे लगेंगे और पढने वाले बच्चों को दूर से ही पहचाना जा सकेगा। पाठशाला (स्कूल) की नजर में सभी समान है। इस बात को गणवेश प्रमाणित करती है। गणवेश जाति और धर्म का भेद मिटाती है। गणवेश से स्कूल की पहचान होती हैं।

उपरोक्त दलीलों के आधार पर लोग गणवेश को उचित ठहराते हैं। लेकिन क्या गणवेश से बच्चे सुन्दर दिखते हैं? हमारे विचार से तो बच्चे सुन्दर होते हैं। इससे आगे तो मामला साफ सफाई का है। जहाँ तक दूर से पहचानने की बात है, तो पहचान कर हम करेंगे भी क्या? क्या हम बच्चों को पढने वाले और ना पढने वाले बच्चों में वर्गीकृत करना चाहते है। एक वर्दी पहनाकर हम क्या साबित करना चाहते है? बच्चों को उनका शिक्षक बिना वर्दी के नहीं जान पाता तो हम ये ही समझेंगे कि शिक्षक और बच्चे की कक्षा में या स्कूल में बातचीत भी नहीं होती है।

जहाँ तक समानता का मामला है, तो क्या एक रंग के कपड़े पहना देने से सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक असमानताएँ खत्म हो जाती हैं? क्या छोटे–बड़े और अमीर–गरीब का भेद मिट जाता है? नहीं, हम नहीं मानते क्योंकि एक रंग होने पर भी जहाँ अमीर का बच्चा सूती कपड़ों को नील डालकर उन पर स्त्री करवाके पहनेगा। वहीं गरीब का बच्चा टेरिकोट के कपड़े को बिना नील और बिना स्त्री के पहनकर आएगा। सम्भव है कि उसके कपड़ कोहनी, घुटनों और कुल्हों पर से घिस–घिस कर फट गए हों। ऐसे में आर्थिक समानता की बात तो खोखली दिखती है। अब धार्मिक समानता की बात है, तो उसमें तो सभी को स्वतंत्रता दी गई है। जैसे– सिक्खों को बाल और कंघा व कडा रखने की। हम यह भी देखते है कि वर्दी को पब्लिक स्कूलों में जितनी कठोरता से लागू किया जाता है, उसकों देखते हुए तो इसे होना ही नहीं चाहिए। अक्सर गणवेश के अभाव में बच्चों को प्रताडित किया जाता है। स्कूल से भगा दिया जाता है। उसे कक्षा में तब तक नहीं बैठने देते जब तक वह गणवेश पहनकर नहीं आता। शिक्षण सत्र के आरंभिक दिनों में सभी को स्कूली गणवेश सिलवाने पर दबाव डाला जाता है। इन सब के कारण बच्चों को शारीरिक और मानसिक यातना तो सहनी ही पड़ती है। साथ में शिक्षण से भी वंचित रखा जाता है। यहाँ ऐसा लगता है मानों विद्यालय गणवेश विद्या से अधिक जरूरी हो गई है। इसी गणवेश के कारण गरीब और पिछड़े बच्चे स्कूल नहीं जा पाते है।

उनके पास घर और स्कूल के लिए अलग–अलग कपड़ें नहीं होते जिसके कारण एक जोडी कपड़ें से ही काम चलाना पडता है। ऐसे में विद्यालय गणवेश का दबाव पड़ने पर माता–पिता बच्चे के लिए गणवेश तो बनवा देते हैं पर दूसरे कपड़े जो घर व आने जाने के होते हैं, उनको नहीं बनवाते। ऐसे में बच्चा हर समय हर जगह विद्यालय गणवेश में ही नजर आता है। शादी विवाह, तीज त्यौहारों के अवसर पर भी बच्चों को विद्यालय गणवेश में देखा जा सकता है। उनकी इसी मजबूरी के कारण बच्चे को लम्बे समय तक अपनी पसन्द व रंगों से समझौता करना पड़ता है। बच्चे का हर अवसर पर विद्यालय गणवेश में होना उसकी आर्थिक मजबूरी को तो दर्शाता ही है साथ में गणवेश के लिए दबाव को भी प्रमाणित करता है। यह दबाव ही तो है जिसके हटते ही बच्चे रंगों को धारण कर लेते है। गुरूवार को गणवेश की सफाई व अन्य कारणों से अवकाश होने पर बच्चे अपनी सम्पन्नता व रूचि का खुलकर प्रदर्शन करते हैं जब ये बच्चे कॉलेज में जाते है तो किसी गणवेश का दबाव नहीं होता और वे उसे अस्वीकार कर देते है। हमारा मानना है, कि गणवेश पाठशाला में अनिवार्य नही होनी चाहिए। पाठशाला में सिर्फ शिक्षण ही अनिवार्य होना चाहिए। गणवेश शिक्षण में कहीं सहायक नहीं है। हमें पाठशाला को सिर्फ पाठशाला रखना चाहिए सैनिक छावनी नहीं बनानी चाहिए। इसलिए हमारे यहां गणवेश नहीं है।

gekjs ;gk x.ko'k ugh gA

उदय सामुदायिक पाठशाला ग्रामीण शिक्षा केन्द्र